

---

# Shri Pragajibhaktamahima Ashtakam

---

## श्रीप्रागजीभक्तमहिमाष्टकम्

---

### Document Information

---

Text title : Shri Pragajibhaktamahima Ashtakam

File name : prAgajIbhaktamahimAShTakam.itx

Category : deities\_misc, svAminArAyaNa, gurudev, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Author : yajnapuruShadAsajImahAraja

Acknowledge-Permission: Swaminarayan Sampradaya

Latest update : August 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 9, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीप्रागजीभक्तमहिमाष्टकम्



(रथोद्धता छन्द)

ज्ञानधर्म-सुविरक्ति-शालिनं  
श्रीहरौ रतिविशिष्ट-मानसम् ।  
धर्मयुक्त-पुरुषाधिक-प्रियं  
प्राग्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ १ ॥

ब्रह्मरूप-मखिलार्थदं विभुं  
योगयुक्त-मुरुपुण्य-सङ्गतम् ।  
स्वप्रताप-निहताखिलासुरं  
प्राग्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ २ ॥

दिव्यनिर्गुण-मनोरमाकृतिं  
नैककोटि-रविचन्द्र-भासुरम् ।  
द्रष्टमात्र-नरनाटकं सदा  
प्राग्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ३ ॥

अक्षराधिपति-तुल्यतां गतं  
स्वान्तरे हि हरिमूर्तिदर्शितम् ।  
सर्वजीव-हृदयस्थ-वेदनं  
प्राग्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ४ ॥

जन्ममृत्यु-भवबन्धमोक्षणं  
प्राज्यशिष्य-शुचिवोधकं मुदा ।  
स्वाश्रितामितजनैः सुपूजितं  
प्राग्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ५ ॥

कृष्णशासन-विलम्बनारुचिं  
दुष्टलोक-विकृतानय-क्षमम् ।  
मानमत्सर-नरा-विबोधितं

प्राग्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ६ ॥

इन्द्रियाश्व-विजितं क्षमाभृतं  
कामदोष-दहने पटुं भृशम् ।

निर्निमेष-नयनं परापहं  
प्राग्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ७ ॥

भूरि कोमलसुधा-समाक्षरं  
द्रग्विलास-हृत-भक्तचेतसम् ।

नीलकण्ठ-सुततुल्य-विग्रहं  
प्राग्जितं गुरुमहं नमामि तम् ॥ ८ ॥

(शार्दूलविक्रीडितम्)

श्रीमन्निर्गुण-मूर्तये च विभवे ज्ञानोपदेष्ट्रे सदा  
सर्वज्ञाय समग्र-साधुगुणिने मायापराय स्वयम् ।  
सर्वैश्वर्यवते निजाश्रितजनानां दोषहर्त्रे च मे  
प्राग्जित-सद्गुरवे नमोस्तु सततं ब्रह्मात्ममुक्तायते ॥ ९ ॥

इति स्वामी यज्ञपुरुषदासजीमहारजविरचितं  
श्रीप्रागजीभक्तमहिमाष्टकं सम्पूर्णम् ।

---

*Shri Pragajibhaktamahima Ashtakam*

pdf was typeset on August 9, 2024

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

